Allah Paak Ke 99 Namon Ki Barkaten (Hindi)

अल्लाह पाक के 99 नामों की बरकतें

सफ़हात 16

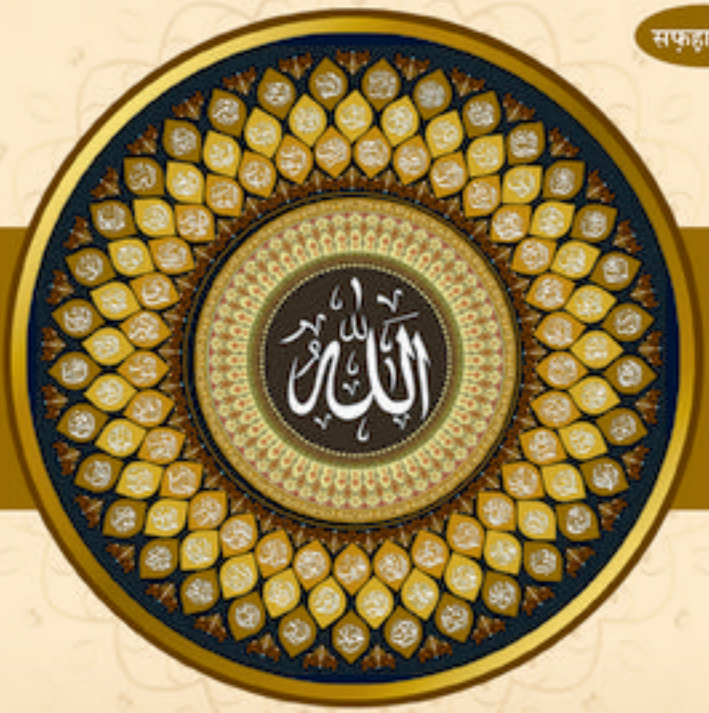

- आप इन्सान हैं या जिन्न ? 01
- 99 अस्माए हुस्ना और इन के फ़ज़ाइल 02
- 99 अस्माउल हुस्ना की ख़्वाब में तरग़ीब 15

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अल्लाह पाक के 99 नामों की बरकतें**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल्लाह पाक के 99 नामों की बरकतें

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़्हात का रिसाला ''**अल्लाह पाक के 99 नामों की बरकतें**'' पढ़ या सुन ले उस की रोज़ी में बरकत दे, उस पर दुन्या व आख़िरत में अपना ख़ास फ़ज़्लो करम और उसे बे हिसाब बख़्श दे।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर सौ मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।

(مُعْجَم اَوسَط، ۵/۲۵۲، حدیث: ۷۲۳۵، دار الکتب العملیۃ بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

आप इन्सान हैं या जिन्न ?

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की कनीज़ ने एक दिन अ़र्ज़ किया, ''हुज़ूर ! सच बताइये कि **आप इन्सान हैं या जिन्न ?**'' फ़रमाया, ''اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं इन्सान ही हूं।'' कहने लगी, ''मुझे तो इन्सान नहीं लगते क्यूं कि मैं चालीस दिन से लगातार आप को **ज़ह़र** खिला रही हूं मगर आप का बाल तक बीका नहीं हुवा !'' फ़रमाया, ''क्या तुझे मा'लूम नहीं जो लोग हर ह़ाल में ज़िक्रुल्लाह करते रहते हैं उन को कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और मैं اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस्मे आ'ज़म के साथ **अल्लाह** पाक का

ज़िक्र करता हूं। पूछा, "वोह इस्मे आ'ज़म कौन सा है ?" फ़रमाया, (मैं हर बार खाने पीने से क़ब्ल येह पढ़ लिया करता हूं :)

بِسۡمِ اللّٰہِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِہٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَھُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ۔

(या'नी **अल्लाह** पाक के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोह सुनने जानने वाला है)

इस के बा'द आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि तूने किस वज्ह से मुझे **ज़ह्र** दिया ? अ़र्ज़ किया, "मुझे आप से बुग़्ज़ था।" येह जवाब सुनते ही आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया, तू लि वज्हिल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक के लिये) आज़ाद है। और तूने मेरे साथ जो कुछ किया वोह भी मैं ने तुझे मुआ़फ़ किया।" (حیاۃ الحیوان الکبریٰ، باب الحاء، ۱/۳۹۱، دار الکتب العلمیۃ بیروت, फ़ैज़ाने बिसमिल्लाह, स. 158, मक्तबतुल मदीना)

99 अस्माए हुस्ना और इन के फ़ज़ाइल

हर विर्द के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये, फ़ाएदा ज़ाहिर न होने की सूरत में शिक्वा करने के बजाए अपनी कोताहियों की शामत तसव्वुर कीजिये और **अल्लाह** पाक की हिक्मत पर नज़र रखिये।

(1) یَا اَللّٰہُ : जो हर नमाज़ के बा'द 100 बार पढ़े اِنْ شَآءَ اللہ उस का बातिन कुशादा हो जाएगा।

(2) ھُوَ اللّٰہُ الرَّحِیْمُ : जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَ اللہ शैतान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा।

(3) یَاقُدُّوْس : का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे اِنْ شَآءَ اللہ थकन से महफ़ूज़ रहेगा।

(4) یَا رَحْمٰنُ : जो कोई सुब्ह़ की नमाज़ के बा'द 298 बार पढ़ेगा ख़ुदाए पाक उस पर बहुत रह़्म करेगा। اِنْ شَآءَاللہ

(5) یَا رَحِیْمُ : जो कोई हर रोज़ 500 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللہ दौलत पाएगा और मख़्लूक़ उस पर मेहरबान और शफ़ीक़ होगी।

(6) یَامَلِکُ : 90 बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللہ ग़ुरबत से नजात पाएगा।

(7) یَاسَلَامُ : 111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से اِنْ شَآءَاللہ शिफ़ा ह़ासिल होगी।

(8) یَا مُؤْمِنُ : जो 115 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम करेगा, اِنْ شَآءَاللہ तन्दुरुस्ती पाएगा।

(9) یَامُهَیْمِنُ 29 **:** बार रोज़ाना पढ़ने वाला اِنْ شَآءَاللہ हर आफ़त व बला से महफ़ूज़ रहेगा।

(10) یَاعَزِیْزُ 41 **:** बार ह़ाकिम या अफ़्सर वग़ैरा के पास जाने से क़ब्ल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ वोह ह़ाकिम या अफ़्सर मेहरबान हो जाएगा।

(11) یَا جَبَّارُ : जो इस का मुसल्सल विर्द रखेगा अपनी ग़ीबत से اِنْ شَآءَاللہ बचा रहेगा।

(12) یَامُتَکَبِّرُ : 21 बार रोज़ाना पढ़ लीजिये, डरावने ख़्वाब आते होंगे तो اِنْ شَآءَاللہ ख़्वाब में नहीं डरेंगे। (मुद्दते इ़लाज : ता हुसूले शिफ़ा)

یَامُتَکَبِّرُ ज़ौजा से "मिलाप" से क़ब्ल 10 बार पढ़ लेने वाला اِنْ شَآءَاللہ नेक बेटे का बाप बनेगा।

(13) یَاخَالِقُ : जो 300 बार पढ़े اِنْ شَآءَاللہ उस का दुश्मन मग़्लूब होगा।

(14) یَابَارِئُ : 10 बार जो कोई हर जुमुआ़ को पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللہ उस को बेटा अ़त़ा होगा।

(15) يَامُصَوِّرُ : जो बांझ औरत सात रोज़े रखे और इफ़्तार के वक़्त 21 बार **يَامُصَوِّرُ** पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लिया करे, **अल्लाह** करीम उस को नेक बेटा अ़ता करेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه

(16) يَا غَفَّارُ : जो इसे हमेशा पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه नफ़्स की बुरी ख़्वाहिशात से छुटकारा पाएगा।

(17) يَاقَهَّارُ : 100 बार अगर कोई मुसीबत आ पड़े तो पढ़िये, اِنْ شَآءَاللّٰه मुश्किल आसान होगी।

(18) يَاوَهَّابُ : 7 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه मुस्तजाबुद्दा'वात होगा। (या'नी हर दुआ क़बूल हुवा करेगी)

(19) يَارَزَّاقُ : जो फ़ज्र के फ़र्ज़ व सुन्नत के दरमियान 41 दिन तक 550 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللّٰه दौलत मन्द होगा।

(20) يَافَتَّاحُ : 70 बार जो रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज्र दोनों हाथ सीने पर रख कर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه उस के दिल का ज़ंग व मैल दूर होगा।

يَافَتَّاحُ 7 बार जो रोज़ाना (किसी भी वक़्त दिन में एक मर्तबा) पढ़ा करेगा, اِنْ شَآءَاللّٰه उस का दिल रोशन होगा।

(21) يَاعَلِيْمُ : जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़ेगा **अल्लाह** पाक उस को दीन व दुन्या की मा'रिफ़त अ़ता फ़रमाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه

(22) يَاقَابِضُ,يَا بَاسِطُ : 30 बार जो हर रोज़ पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللّٰه वोह दुश्मन पर फ़त्ह पाएगा।

(23) يَا بَاسِطُ : जो 40 बार पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه ख़ल्क़ से बे परवा होगा।

(24) يَا خَافِضُ : जो कोई इसे 500 बार पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه दुश्मन से अमान में रहेगा।

(25) يَارَافِعُ : 20 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा, اِنْ شَآءَاللّٰه उस की मुराद पूरी होगी।

(26) یَا مُعِزُّ : जो कोई इसे बा'द नमाज़े इ़शा शबे जुमुआ़ 140 बार पढ़े मख़्लूक़ की नज़र में उस की इ़ज़्ज़त व हुरमत और हैबत बढ़ेगी। اِنْ شَآءَاللّٰه

(27) یَا حَکَمُ : जो पांचों वक़्त हर नमाज़ के बा'द 80 बार पढ़ लिया करे किसी का मोह़ताज न होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه

(28) یَا بَصِیْرُ : 7 बार जो कोई रोज़ाना ब वक़्ते अ़स्र (या'नी इब्तिदाए वक़्ते अ़स्र ता ग़ुरूबे आफ़्ताब किसी भी वक़्त) पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه अचानक मौत से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(29) یَاسَمِیْعُ : 100 बार जो रोज़ाना पढ़े और इस दौरान गुफ़्तगू न करे और पढ़ कर दुआ़ मांगे اِنْ شَآءَاللّٰه जो मांगेगा पाएगा।

(30) یَا مُذِلُّ ,یَا مُعِزُّ : जो कोई 75 बार पढ़ कर सज्दा करे और कहे या इलाही ! फ़ुलां ज़ालिम के शर से मुझे मह़फ़ूज़ रख, **अल्लाह** पाक उसे अमान देगा और अपनी ह़िफ़ाज़त में रखेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه

(31) یَا عَدْلُ : जो कोई मग़रिब की नमाज़ के बा'द 1000 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللّٰه आस्मानी बलाओं से नजात पाएगा।

(32) یَا لَطِیْفُ : बेटियों के नसीब खुलने और अमराज़ से सिह़्ह़त और मुश्किलात से नजात के लिये हर रोज़ तह़िय्यतुल वुज़ू के बा'द 100 बार पढ़ लिया करे।

(33) یَا خَبِیْرُ : जो कोई नफ़्से अम्मारा के हाथ गिरिफ़्तार हो तो हर रोज़ वज़ीफ़ा कर लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه नजात पाएगा।

(34) یَا حَلِیْمُ : जो कोई इस को काग़ज़ पर लिख कर फिर इस को धो दे और अपनी खेती पर छिड़क दे, اِنْ شَآءَاللّٰه ज़राअ़त हर आफ़त से ह़िफ़ाज़त में रहेगी।

(35) یَا عَظِیْمُ : जो 7 दफ़्आ़ पानी पर पढ़ कर दम कर के पानी पी ले اِنْ شَآءَاللہ उस के पेट में दर्द न हो।

(36) یَا غَفُوْرُ : जिस को दर्दे सर या कोई बीमारी या ग़म पेश आ जाए 3 बार یَا غَفُوْرُ की मुक़त्त़आ़त लिख कर (या'नी इस इस्मे पाक को काग़ज़ पर लिख कर इस की गीली सियाही पर रोटी का टुकड़ा लगा कर वोह नक़्श रोटी में जज़्ब कर ले और) खा ले, اِنْ شَآءَاللہ शिफ़ा पाएगा।

(37) یَاشَکُوْرُ : जो कोई 5000 बार रोज़ पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللہ क़ियामत के दिन बुलन्द मर्तबा होगा।

(38) یَا عَلِیُّ : जो वरम (या'नी सूजन) पर 3 बार पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَاللہ सिह़्ह़त पाएगा।

(39) یَا کَبِیْرُ : जो 9 दफ़्आ़ किसी बीमार पर पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَاللہ सिह़्ह़त याब हो जाएगा।

(40) یَا حَفِیْظُ : जो 16 बार हर रोज़ पढ़े اِنْ شَآءَاللہ हर त़रह़ बहादुर रहे।

(41) یَا مُقِیْتُ : जिस की आंख सुर्ख़ हो और दर्द करे 10 बार पढ़ कर दम कर ले।

(42) یَا حَسِیْبُ : जो हर रोज़ 70 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللہ हर आफ़त से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(43) یَا جَلِیْلُ : 10 बार पढ़ कर जो अपने माल व अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दे, اِنْ شَآءَاللہ चोरी से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(44) یَا کَرِیْمُ : अगर अपने बिस्तर में इस को पढ़ते पढ़ते सो जाए तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करेंगे। اِنْ شَآءَاللہ

(45) یَا رَقِیْبُ : जो कोई फोड़े फुन्सी पर 3 बार पढ़ कर फूंक देगा, اِنْ شَآءَاللہ शिफ़ा ह़ासिल होगी।

(46) یَا مُجِیْبُ : जो कोई 3 बार पढ़ कर दम करेगा اِنْ شَآءَاللہ दर्दे सर दूर होगा।

(47) یَا وَاسِعُ : जिस को बिच्छू काट ले वोह 70 बार पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَاللہ ज़हर असर न करेगा।

(48) یَاحَکِیْمُ : 80 बार जो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द पढ़ लिया करे, اِنْ شَآءَاللہ : किसी का मोहताज न हो।

(49) یَا وَدُوْدُ : इस इस्म को 1000 बार खाने पर पढ़ कर जिस जानिब से ना मुवाफ़क़त हो उसे खिला दें, اِنْ شَآءَاللہ दुश्मनी ख़त्म हो जाएगी।

(50) یَا مَجِیْدُ : जो गर्मियों में इसे पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللہ प्यास से मामून (या'नी महफ़ूज़) रहेगा।

(51) یَا بَاعِثُ : जो कोई 7 बार पढ़ कर अपने ऊपर फूंके और हाकिम के रू बरू जाए اِنْ شَآءَاللہ हाकिम मेहरबान हो।

(52) یَاشَهِیْدُ : 21 बार सुब्ह (तुलूए आफ़्ताब से पहले पहले) ना फ़रमान बच्चे या बच्ची की पेशानी पर हाथ रख कर आस्मान की तरफ़ मुंह कर के जो पढ़े اِنْ شَآءَاللہ उस का वोह बच्चा या बच्ची नेक बने।

(53) یَا حَقُّ : अगर क़ैदी आधी रात को नंगे सर 108 बार पढ़ेगा, اِنْ شَآءَاللہ क़ैद से रिहाई पाएगा।

(54) یَاوَکِیْلُ : 7 बार जो रोज़ाना अ़स्र के वक़्त पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللہ आफ़त से पनाह पाए।

(55) یَا قَوِیُّ : अगर जुमुआ़ की दूसरी साअ़त में बहुत पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللہ निस्यान (या'नी भूलने का मरज़) जाता रहेगा।

(56) یَامَتِیْنُ : जिस बच्चे का दूध छुड़ा दिया गया हो उसे काग़ज़ पर लिख कर पिला दें, तस्कीन होगी और मां का दूध कम हो तो इसी इस्मे

पाक को लिख कर पिला दें दूध ज़ियादा होगा।

(57) يَا وَلِيُّ : जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللّٰه उस की ज़ौजा उस की फ़रमां बरदार हो जाएगी।

(58) يَاحَمِيْدُ : 90 बार, जिस की गन्दी बातों की आ़दत न जाती हो वोह पढ़ कर किसी ख़ाली पियाले या गिलास में दम कर दे। ह़स्बे ज़रूरत उसी में पानी पिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه फ़ोह़्श गोई की आ़दत निकल जाएगी। (एक बार का दम किया हुवा गिलास बरसों तक चला सकते हैं)

(59) يَامُحْيِي : 7 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लीजिये, गैस हो या पेट या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो, اِنْ شَآءَاللّٰه फ़ाएदा होगा। (मुद्दते इ़लाज : ता ह़ुसूले शिफ़ा, रोज़ाना कम अज़ कम एक बार)

(60) يَامُمِيْتُ,يَامُحْيِي : 7 बार रोज़ाना पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه जादू असर नहीं करेगा।

(61) يَا حَيُّ : जो कोई बीमार हो इस इस्म को 1000 बार पढ़े, اِنْ شَآءَاللّٰه सिह़्ह़त पाएगा।

(62) يَاقَيُّوْمُ : सुब्ह़ के वक़्त जो कोई इस को कसरत से पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللّٰه उस का तसर्रुफ़ दिलों में ज़ाहिर होगा, या'नी लोग उस को दोस्त रखेंगे।

(63) يَاوَاجِدُ : जो कोई खाना खाते वक़्त हर निवाले पर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه वोह खाना उस के पेट में नूर होगा और बीमारी दूर होगी।

(64) يَامَاجِدُ : 10 बार पढ़ कर शरबत वग़ैरा पर दम कर के जो पी लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه बीमार न होगा।

(65) يَاوَاحِدُ : 1001 बार, जिस को अकेले में डर लगता हो, तन्हाई में पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه उस के दिल से ख़ौफ़ जाता रहेगा।

(66) يَا اَحَدُ : जो कोई इस इस्म को 9 मर्तबा पढ़ कर ह़ाकिम के आगे जाए, اِنْ شَآءَاللّٰه इ़ज़्ज़त और सरफ़राज़ी पाएगा। जो तन्हा इसे हज़ार बार पढ़ेगा नेक बन जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه

(67) يَا صَمَدُ : जो इसे 1000 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللّٰه दुश्मन पर फ़त्ह़ पाएगा।

(68) يَاقَادِرُ : जो वुज़ू के दौरान हर उ़ज़्व धोते हुए पढ़ने का मा'मूल बना ले اِنْ شَآءَاللّٰه दुश्मन उस को इग़्वा नहीं कर सकेगा।

يَاقَادِرُ 41 बार, मुश्किल आ पड़े तो पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه आसानी हो जाएगी।

(69) يَامُقْتَدِرُ : 20 बार जो रोज़ाना पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه रह़मतों के साए में रहेगा।

يَامُقْتَدِرُ : 20 बार, जो नींद से बेदार हो कर पढ़ लिया करेगा उस के हर काम में मददे इलाही शामिल रहेगी।

(70) يَا مُقَدِّمُ : जो जंग या किसी ख़ौफ़ की जगह पर बेचैनी की ह़ालत में हो तो वोह इस इस्मे मुबारक की कसरत करे।

(71) يَامُؤَخِّرُ : 100 बार हर रोज़ पढ़ने वाले के اِنْ شَآءَاللّٰه सब काम पूरे होंगे।

(72) يَااَوَّلُ : 100 बार रोज़ाना पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه उस की ज़ौजा उस से मह़ब्बत करेगी।

(73) يَا آخِرُ : जो किसी जगह जाए और इस इस्मे पाक को पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه वहां इ़ज़्ज़त व तौक़ीर पाएगा।

(74) يَاظَاهِرُ : घर की दीवार पर लिख लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه दीवार सलामत रहेगी।

(75) یَا بَاطِنُ : जो किसी को अमानत सोंपे या ज़मीन में दफ़्न करे तो اَلْبَاطِنُ लिख कर उस शै के साथ रख दे, اِنْ شَآءَاللہ कोई उस में ख़ियानत न कर सकेगा।

(76) یَا وَالِی : जो कोई कोरे पियाले पर लिख कर उस में पानी भर कर घर के दरो दीवार पर डाले तो اِنْ شَآءَاللہ वोह घर आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा।

(77) یَا مُتَعَالِی : मुश्किल तरीन कामों के लिये इस की कसरत बेहद मुफ़ीद है।

(78) یَا بَرُّ : जो शख़्स 7 मर्तबा पढ़ कर बच्चे पर दम कर के **अल्लाह** पाक की सिपुर्दगी में दे दे बालिग़ होने तक اِنْ شَآءَاللہ वोह बच्चा बलाओं से महफ़ूज़ रहेगा।

(79) یَا تَوَّابُ : जो कोई चाश्त की नमाज़ के बा'द 360 बार इस को पढ़ेगा **अल्लाह** पाक उस को तौबतुन्नसूह (या'नी सच्ची तौबा) नसीब फ़रमाएगा। اِنْ شَآءَاللہ

(80) یَا مُنْتَقِمُ یَا عَفُوُّ : दुश्मन को दोस्त बनाने के लिये तीन जुमुआ तक इस को कसरत से पढ़िये।

(81) یَا عَفُوُّ : जिस के गुनाह बहुत हों वोह इस इस्मे पाक की कसरत करे **अल्लाह** पाक अपने फ़ज़्ल से उस के तमाम गुनाह बख़्श देगा।

(82) یَا رَءُوْفُ : 10 बार, जो किसी मज़्लूम का किसी ज़ालिम से पीछा छुड़ाना चाहे, पढ़े फिर उस ज़ालिम से बात करे اِنْ شَآءَاللہ वोह ज़ालिम उस की सिफ़ारिश क़बूल कर लेगा।

(83) یَا مَالِکَ الْمُلْکِ : जो इस की कसरत करेगा اِنْ شَآءَاللہ ख़ुशहाल होगा।

(84) یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام : इस की कसरत से ख़ुशहाली नसीब होगी और इस के साथ दुआ करने से दुआ मक़्बूल होगी। اِنْ شَآءَاللہ

(85) يَا مُقْسِطُ : शैत़ानी वस्वसों से बचने के लिये 100 मर्तबा पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। اِنْ شَآءَاللّٰه

(86) يَا جَامِعُ : जिस के अ़ज़ीज़ व अक़ारिब जुदा हो गए हों, चाश्त के वक़्त ग़ुस्ल कर के आस्मान की त़रफ़ मुंह कर के 10 बार इस इस्म को पढ़े और हर बार में एक उंगली बन्द करता जाए फिर अपने मुंह पर हाथ फेरे اِنْ شَآءَاللّٰه थोड़े अ़रसे में सब जम्अ़ हो जाएंगे।

(87) يَا غَنِيُّ : रीढ़ की हड्डी, घुटनों, जोड़ों या जिस्म में कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه दर्द जाता रहेगा।

(88) يَا مُغْنِيُ : एक बार पढ़ कर हाथों पर दम कर के दर्द की जगह पर मलने से اِنْ شَآءَاللّٰه सुकून मिलेगा।

(89) يَامَانِعُ ,يَامُعْطِيُ : 20 बार, बीवी नाराज़ हो तो शौहर और अगर शौहर नाराज़ हो तो बीवी सोने से क़ब्ल बिछोने पर बैठ कर पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه सुल्ह़ हो जाएगी। (मुद्दत : ता हुसूले मुराद)

(90) يَاضَآرُّ ,يَانَافِعُ : जिसे कोई मन्सब मिले और वोह उस पर क़ाइम रहना चाहे तो वोह हर शबे जुमुआ़ और अय्यामे बीज़ (या'नी हर इस्लामी माह की 13,14,15 तारीख़) में 100 बार पढ़े।

(91) يَانَافِعُ : 20 बार, जो किसी काम को शुरूअ़ करने से क़ब्ल पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه वोह काम उस की मरज़ी के मुत़ाबिक़ पूरा होगा।

(92) يَا نُوْرُ : जो सात मर्तबा सूरए नूर और 1001 बार يَا نُوْرُ पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه उस का दिल रोशन हो जाएगा।

(93) يَا هَادِيُ : जो कोई आस्मान की त़रफ़ मुंह कर के हाथ उठा कर इस इस्म को कसरत से पढ़े और वोह हाथ अपने मुंह और आंखों पर मल ले اِنْ شَآءَاللّٰه अहले मा'रिफ़त का मर्तबा पाएगा।

(94) یَا بَدِیْعُ : जिस को कोई सख़्त मुहिम (या'नी मुआ़मला) दरपेश हो 70,000 (सत्तर हज़ार) बार पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه काम्याब होगा।

(95) یَا بَاقِیُ : जो सूरज निकलने से पहले 100 बार रोज़ पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللّٰه दुख से महफ़ूज़ रहेगा।

(96) یَا وَارِثُ : जो इस का विर्द करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه उस की उ़म्र दराज़ (या'नी लम्बी) होगी।

(97) یَارَشِیْدُ : जो शख़्स किसी काम की तदबीर न जानता हो वोह मग़रिब और इ़शा के दरमियान 1000 बार पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه सहीह़ तदबीर उस के दिल में आ जाएगी।

(98) یَا صَبُوْرُ : जिस को दर्द या रन्ज या मुसीबत पेश आए 33 बार पढ़े, اِنْ شَآءَاللّٰه सुकून ह़ासिल होगा।

(99) یَامُؤَخِّرُ : जो इस नाम को किसी नमाज़ के बा'द 100 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللّٰه उस का दिल **अल्लाह** पाक की महब्बत और उस की याद में रहे।

सिंगर (गुलूकार) दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बस हर दम दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه दोनों जहां में बेड़ा पार होगा। चुनान्चे एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 27 साल) का बयान कुछ यूं है कि मुझे बचपन में ना'तें पढ़ने का शौक़ था, घरेलू फ़ंक्शन्ज़ (तक़ारीब) में भी कभी कभार फ़रमाइशी गाना गा लेता। आवाज़ अच्छी होने के सबब ख़ूब दाद मिलती जिस से मैं ''फूल'' पड़ता। जब थोड़ा बड़ा हुवा तो गिटार (एक आलए मूसीक़ी) सीखने का शौक़ हो गया, फिर मैं ने बा क़ाइ़दा गाना सीखने के लिये एकेडमी में दाख़िला ले लिया, कई साल तक सीखने के

बा'द मैं ने गाने के मुक़ाबलों में हिस्सा लेना शुरूअ़ कर दिया, कई टी वी चेनल्ज़ पर भी गाया। वक़्त के साथ साथ शोहरत भी मिलती गई। फिर मुझे दुबई के बहुत बड़े शो (प्रोग्राम) में शिर्कत का मौक़अ़ मिला, वहां से हिन्द (भारत) चला गया जहां तक़्रीबन छे माह तक गाने के मुख़्तलिफ़ मुक़ाबलों में हिस्सा लिया, बड़े बड़े फ़ंक्शन्ज़ और फ़िल्मों में गाना गाया और काफ़ी नाम व माल कमाया। फिर गुलूकारों की टीम के साथ दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक [केनेडा (टोरन्टो, वैंकुवर), अमरीका के 10 स्टेट्स (शिकागो, लॉस एन्जेलस, सान फ़्रांसिस्को वग़ैरा), इंग्लैंड (लन्दन)] में गया। जब कुछ अ़र्से के लिये वत़न आया तो अहले ख़ाना और मह़ल्ले दारों ने बड़ी पज़ीराई की, अगर्चे नफ़्स को इस से बड़ा मज़ा आया मगर दिल की दुन्या बे सुकून थी, कुछ कमी सी मह़सूस हो रही थी। दिल रूह़ानिय्यत का त़लबगार था, नमाज़ के लिये मस्जिद में आना जाना हुवा तो वहां पर इ़शा की नमाज़ के बा'द होने वाले दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** में शिर्कत की सआ़दत मिली। दर्स अच्छा लगा लिहाज़ा मैं कभी कभार उस में बैठने लगा मगर दिलो दिमाग़ पर बार बार मुल्क से बाहर जाने, ख़ूब गाने सुनाने, धन दौलत कमाने और शोहरत पाने का भूत सुवार था, दर्स के बा'द इस्लामी भाई मुझ पर जूं ही **इन्फ़िरादी कोशिश** शुरूअ़ करते मैं टाल मटोल कर के निकल जाता। एक रात सोया तो ख़्वाब में **दा'वते इस्लामी** के एक मुबल्लिग़ की ज़ियारत हुई जो बुलन्द जगह पर खड़े मुझे अपने पास बुला रहे थे गोया कि मुझे गुनाहों के दलदल से निकलने पर उभार रहे थे, जब सुब्ह़ उठा तो अपने मौजूदा अन्दाज़े ज़िन्दगी पर कुछ देर ग़ौरो फ़िक्र किया मगर गुनाहों भरी ह़ालत ही रही, कुछ अ़र्से बा'द मैं ने एक और ख़्वाब देखा जिस ने मुझे हिला कर रख दिया ! क्या देखता हूं

कि मैं मर चुका हूं और मेरी लाश को ग़ुस्ल दिया जा रहा है। फिर मैं ने ख़ुद को बरज़ख़ में पाया, उस वक़्त मैं ने अपने आप को ऐसा बेबस महसूस किया कि कभी न किया था, अब मैं ने ख़ुद से कहा : "तुम बहुत मशहूर होना चाहते थे, देख ली अपनी औक़ात!" सुब्ह जब आंख खुली तो मैं पसीने में नहाया हुवा था और मेरा बदन थरथर कांप रहा था और यूं लग रहा था गोया एक मौक़अ और देते हुए मुझे दोबारा दुन्या में भेज दिया गया हो। अब मेरे सर से गाना गाने का भूत मुकम्मल तौर पर उतर चुका था, मैं ने गुनाहों से सच्ची तौबा की और अज़्मे मुसम्मम कर लिया कि आयन्दा किसी सूरत में भी गाना नहीं गाऊंगा। जब घर वालों को इस बात का पता चला तो उन्हों ने सख़्त मुज़ाहमत की मगर **अल्लाह पाक और रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करम से मेरा मदनी ज़ेहन बन चुका था लिहाज़ा मैं अपने फ़ैसले पर क़ाइम रहा। मुझे ख़्वाब में दोबारा उसी मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की ज़ियारत हुई, उन्हों ने मेरी हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। **अल्लाह** पाक के इस इर्शादे मुबारक :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ है। (پ۲۱، العنکبوت:۶۹)) के मिस्दाक़ मुझे **दा'वते इस्लामी** में इस्तिक़ामत मिलती चली गई। मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ कर दी, अपने चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली और अपने सर को **सब्ज़ सब्ज़ इमामे** से सर सब्ज़ कर लिया। पहले मैं गानों के अश्आर पढ़ा करता था अब मक्तबतुल मदीना से शाएअ होने वाली कुतुब व रसाइल का मुतालआ करना मेरा मा'मूल था। एक रात कोई किताब पढ़ते पढ़ते जब सोया तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर

जाग उठी और मुझे ख़्वाब में अपने आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हो गई जिस पर मैं अपने रब का जितना भी शुक्र करूं कम है। इस से मेरे दिल को बड़ी ढारस मिली। फिर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की क़ब्र मुबारक मुसल्सल बरसात की वज्ह से जब ख़ुली तो उन के सह़ीह़ सलामत बदन, ताज़ा कफ़न, सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे और ज़ुल्फ़ों के जल्वे देख कर मैं ख़ुशी से झूम उठा कि **दा'वते इस्लामी** के वाबस्तगान पर **अल्लाह पाक और रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कैसा करम व एह़सान है। मदनी काम करते करते कल का गुलूकार **जुनैद शैख़** मदनी माह़ोल की बरकत से आज का मुबल्लिग़ व ना'त ख़्वां बन गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ता दमे तह़रीर मुझे **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशावरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से मस्जिद और बाज़ार में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने, **सदाए मदीना** लगाने या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने, अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** करने की सआ़दत ह़ासिल है। **अल्लाह** पाक मुझे मरते दम तक मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

99 अस्माउल ह़ुस्ना की ख़्वाब में तरग़ीब

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! दुन्या के मशहूर व मा'रूफ़ साबिक़ गुलूकार (SINGER) **जुनैद शैख़** ने येह ''मदनी बहार'' लिखवा देने के कुछ दिन बा'द सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) को बताया कि ''اَلْحَمْدُ لِلّٰه ह़ाल ही में मुझे फिर एक बार सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा, जिस में **अल्लाह** पाक के **अस्माउल ह़ुस्ना** याद करने का इशारा मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह मैं ने याद कर लिये

हैं ।'' प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰه यूं तो ह़दीसे पाक में **99 अस्माउल ह़ुस्ना** याद करने की फ़ज़ीलत मौजूद है मगर ख़ुश नसीबी की मे'राज कि आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर अपने दीवाने को ख़ुसूसिय्यत के साथ इस की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई । **99 अस्माउल ह़ुस्ना** की फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये : चुनान्चे

अल्लाह करीम के महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **अल्लाह** पाक के निनानवे नाम हैं जिस ने इन्हें याद कर लिया वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा ।

(بُخاری، کتاب الشروط، باب مایجوز من الاشراط۔۔۔الخ، ۲/۲۲۹، حدیث: ۲۷۳۶، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये ''**नुज़्हतुल क़ारी शर्ह़े सह़ीहुल बुख़ारी**'' सफ़्ह़ा 895 ता 898 मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	सिंगर (गुलूकार) दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?	12
आप इन्सान हैं या जिन्न ?	1		
99 अस्माए ह़ुस्ना और इन के फ़ज़ाइल	2	99 अस्माउल ह़ुस्ना की ख़्वाब में तरग़ीब	15

दीमक से ह़िफ़ाज़त

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه 41 बार पढ़ कर ज़ख़ीरा की हुई चीज़ों और किताबों वग़ैरा पर दम कर दिया जाए तो दीमक और दूसरे कीड़े मकोड़ों से اِنْ شَآءَ اللّٰه ह़िफ़ाज़त होगी । (चिड़िया और अन्धा सांप, स. 32)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मुंह की बदबू दूर करने का तरीक़ा

✿ नीम के 12 पत्ते एक गिलास पानी में अच्छी त़रह़ उबाल कर छान लीजिये, पानी की गरमी कुछ कम होने पर इस से ग़रारे कीजिये, येह जरासीम कुश है, इस के बा क़ाइदा इस्ति'माल से मुंह का अन्दरूनी हिस्सा साफ़ होता और मुंह की बदबू दूर हो जाती है। ✿ **नीम** गर्म पानी में नमक मिला कर ग़रारे कीजिये, नमक में पाए जाने वाले अ़नासिर मुर्दा ख़लियों को निकाल कर **मुंह की बदबू** दूर करते हैं। (**40** रूह़ानी इलाज, स. 17)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net